गिद्ध सड़ा मांस कैसे खा लेते हैं?

अधिकांश जानवर सड़ा मांस खाएंगे तो जान से हाथ धो बैठेंगे। मगर गिद्धों को देखिए। ऐसा मांस ही उनका भोजन है और वे बड़े चाव से इसे खाते और पचाते हैं। इन पक्षियों के इस घातक भोजन के रहस्य को समझने के लिए डेनमार्क के आर्हुस विश्वविद्यालय के सूक्ष्मजीव वैज्ञानिक लार्स हैन्सन के दल ने इनकी आंतों के सूक्ष्मजीव संसार का विश्लेषण किया।

दुनिया भर में गिद्धों की विभिन्न प्रजातियां पाई जाती हैं और सबकी सब सड़े-गले मांस पर पलती हैं। वास्तव में गिद्ध सक्रियता से ऐसे भोजन की तलाश करते हैं। समस्या यह है कि जब तक कोई जानवर जीवित है तब तक उसका शरीर तमाम सूक्ष्मजीवों को नियंत्रण में रखता है। मगर जानवर के मरते ही ये सूक्ष्मजीव बेकाबू हो जाते हैं। ये अंदर ही अंदर उस जीव के शरीर का भक्षण करते हैं और इस दौरान कई घातक विष पैदा करते हैं। इस कार्य में मिट्टी में रहने वाले *बैसिलस एंथ्रेसिस* जैसे बैक्टीरिया भी इनकी मदद करते हैं।

हैन्सन ने दो अमरीकी गिद्धों का अध्ययन किया: 26 काले गिद्ध (*कोरेजिप्स एट्रेटस*) और 24 टर्की गिद्ध (*केथार्टस औरा*)। पहली बात यह पता चली कि इन गिद्धों की चोंच व चेहरे पर कम से कम 500 सूक्ष्मजीव प्रजातियों के डीएनए अंश पाए गए। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि गिद्ध भोजन ग्रहण करते समय अपनी चोंच व पूरे चेहरे को मांस में अंदर तक गड़ा देते हैं।

जब शोधकर्ताओं ने इन गिद्धों की आंतों के सूक्ष्मजीवों का अध्ययन किया तो अपेक्षाकृत कम सूक्ष्मजीव मिले - मात्र 76 प्रजातियों के डीएनए मिले। तुलना के लिए देखें कि मनुष्यों की आंतों में सैकड़ों किस्म के सूक्ष्मजीव पाए जाते हैं। गिद्ध अपने भोजन के साथ जो सूक्ष्मजीव भक्षण करते हैं उनके डीएनए तक आंतों में नहीं मिले। इसका मतलब है कि गिद्धों का पेट सचमुच एक सख्त पर्यावरण है जहां सब कुछ पच जाता है।

वैसे शोधकर्ताओं ने पाया कि गिद्धों की आंतों में दो किस्म के बैक्टीरिया बहुत अधिक संख्या में पाए जाते हैं। एक तो हैं *क्लॉस्ट्रिडिया* (जो विष पैदा करते हैं) और दूसरे हैं *फ्यूसोबैक्टीरिया*। हैन्सन का विचार है कि शायद ये सूक्ष्मजीव सड़े-गले मांस को पचाने का काम करते हैं और गिद्धों में इनके खिलाफ प्रतिरोध पैदा हो चुका है। या यह भी हो सकता है कि गिद्धों के साथ जीते-जीते इन सूक्ष्मजीवों में विष पैदा करने वाले जीन्स गायब हो गए हैं।

रोचक बात यह है कि कुछ समय पहले मगरमच्छों की आंतों में भी इन्हीं सूक्ष्मजीवों की अधिकता पाई गई थी। मगरमच्छ भी सड़े-गले मांस पर जीवित रहते हैं। वैज्ञानिकों को लगता है कि यह मात्र संयोगवश नहीं हो सकता और इसका अध्ययन करने की ज़रूरत है। ***(स्रोत फीचर्स)***